॥ श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ॥

श्री श्री भागवत-पत्रिका

राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी अनुपम वाहिका

वर्ष—१७ संख्या—१-३ प्रबन्ध क्रमांक-९

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजको समर्पित
एवं
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके
आदेश-निर्देश और प्रेरणानुसार

श्रील गुरुदेव-स्मरण-मङ्गल-कणिकाएँ

मैं केवल कृष्णकी वंशीध्वनि सुन रहा हूँ

एक बार क्रिसमसके समय हम श्रील गुरुदेवके साथ फिलीपीन्सके सेबू द्वीप पर थे। भक्त लोगोंने श्रील गुरुदेवके ठहरनेके लिए एक अवकाश निवास (holiday resort) में व्यवस्था की थी। उस निवासकी व्यवस्था बहुत सुहावनी थी, पासमें ही कई ताड़के वृक्ष थे एवं नीले समुद्रका दृश्य अति सुन्दर था। श्रील गुरुदेवका कक्ष गलियारेका अन्तिम कक्ष था, जो समुद्रके निकटतम था। साधारणतः यह एक शान्तिपूर्ण स्थान होता है, परन्तु इस बार यह ऐसा नहीं था। इस कक्षके सामने ही समुद्रके तटपर तीव्र कोलाहलका वातावरण था।

जिन भक्तोंने वहाँ श्रील गुरुदेवके रहनेकी व्यवस्था की थी, उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि एक कम्पनीने बड़ा आड़म्बरपूर्ण क्रिसमस उत्सव मनानेके लिए इस अवकाश निवासको किराये पर ले लिया था। सांसारिक सङ्गीतोंकी तान और

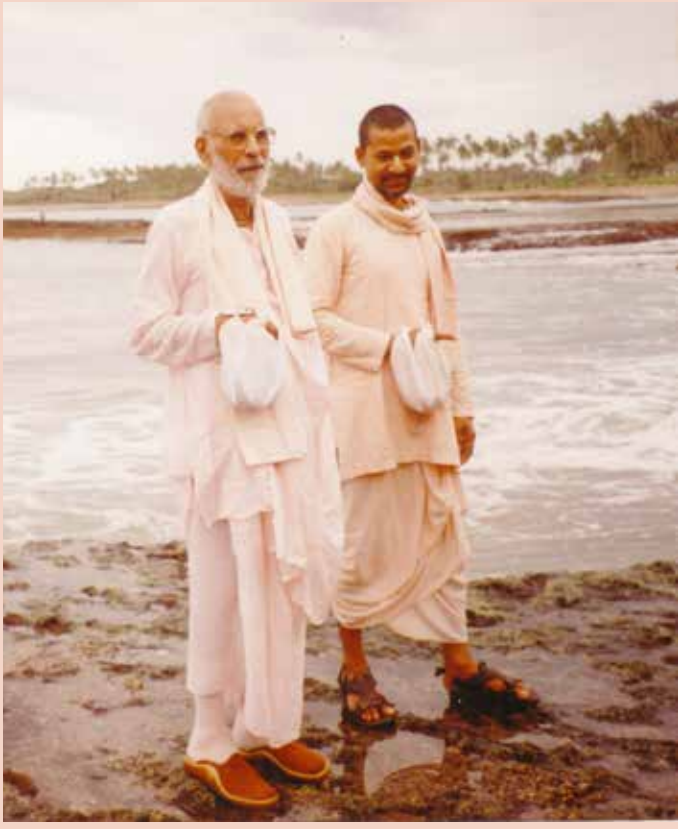

तुच्छ क्रीड़ाओंका शोरगुल वातावरणको कलुषित कर रहा था तथा सभी लोग अरुचिकर(कुत्सित) खान-पानमें रत थे।

ऐसी परिस्थितिमें श्रील गुरुदेवका वहाँ पर रहना हमारे लिए बड़े उद्वेगकी बात थी। तब भक्तोंने श्रील गुरुदेवसे कहा कि उनके लिए उसी निवासमें अन्य एक कक्षकी व्यवस्था की जा चुकी है जो इस कोलाहलसे बहुत दूर है।

परन्तु, हम सबको आश्चर्यचकित करते हुए श्रील गुरुदेवने सरलभावसे कहा—"उन लोगोंको बाधा मत देना। मैं केवल कृष्णकी वंशीध्वनि ही सुन रहा हूँ।"

—श्रीमती तुङ्गविद्या दासी, वृन्दावन
[gurudevamemories.comसे अनुदित]

पुष्पमाला पहनानेके सम्बन्धमें शिक्षा

ईस्वी सन् २००४ के एक वर्ष बाद श्रील गुरुदेव हर्मोसा तटपर स्थित हमारे घरमें आये। वे कहीं पर भी पहुँचते थे तो मैं सदैव उन्हें एक पुष्पमाला अर्पित करती थी। परन्तु इस बार उन्होंने मुझसे कहा, "माला किस समुचित पद्धतिसे समर्पितकी जाती है, मैं तुम्हें इसकी शिक्षा दूँगा। माला बनाकर तुम इसे माधव महाराजको देना। वह इसे तुम्हारे श्रीविग्रहोंको समर्पित करेंगे, तब श्रीविग्रहोंसे प्रसादी मालाको लाकर तुम अपने पतिको देना और तुम्हारे पति उसे मुझे देंगे।"

मैंने माला बनाकर माधव महाराजको दी और उन्होंने उसे हमारे श्रीविग्रहोंको समर्पित किया। मध्याह्न भोजनके बाद सभी लोग विश्राम करने लगे, श्रीविग्रह भी। विश्रामके बाद मैंने विग्रहोंको जगाया। माधव महाराजने मालाको लाकर मुझे दिया। तब माधव महाराज, मेरे पति और मैं गुरुदेवके कक्षमें गये। वहाँ गुरुदेवके समीप मैंने अपने पतिको वह प्रसादी माला दी और उन्होंने उसे गुरुदेवके गलेमें पहनाया।

श्रील गुरुदेवने कहा, "तुमको सदा इस प्रकारसे ही करना चाहिए।" तबतक माला पूरी तरहसे मुरझा गयी थी, तथापि हमने वैसा ही किया। मालाके

मुरझानेके कारण मैं कुछ दुखित थी और सम्भवतः श्रील गुरुदेव मेरे मनोभावसे अवगत हो गये।

उसके बाद श्रील गुरुदेवने कई बार मुझसे मालाओंको हवाई अड्डे पर स्वीकार किया। हावाई द्वीपमें दुकानों पर ताजी मालाएँ बिकती हैं। मैं एक ताजी सुगन्धित माला खरीदती और श्रील गुरुदेवको समर्पित कर देती। परन्तु उन्होंने और कभी मुझपर शासन नहीं किया अथवा उस उपदेशको पालन करनेके लिए बाध्य नहीं किया।

—श्रीमती भवतारिणी दासी
(श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपादसे दीक्षित और श्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजकी शिक्षा-शिष्या)
[gurudevamemories.com से अनुदित]

आचरण द्वारा शिक्षा

१९८० दशकके आरम्भिक वर्षोंमें शीतकालका समय था। श्रील गुरुदेवको तेज बुखार था। मैं अपने माता-पिताके साथ गुरुदेवके दर्शनके लिए मठमें गयी। गुरुदेव पतलेसे गद्दे पर लेटे हुए थे और उन्होंने पतली-सी रजाई ओढ़ रखी थी। जब मेरे पिताजीने गुरुदेवके चरण स्पर्श किये तो पिताजीने कहा, "महाराजजी आपको तो बहुत तेज बुखार है और आप इतने पतलेसे गद्दे पर पतली-सी रजाई ओढ़कर लेटे हुए हैं। यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं आपके लिए मोटी रजाई और मोटा गद्दा भिजवा दूँ।" तब गुरुदेवने तुरन्त कहा, "नहीं, नहीं। हम अपने घरबारकी समस्त सुविधाएँ छोड़कर भजन करनेके लिए आये है। यदि हम मोटे बिस्तरोंपर सोयेगें तो हमसे सुबह जल्दी उठा नही जायेगा, फिर हम भजन कैसे करेगें?

यद्यपि श्रील गुरुदेव श्रीराधाकृष्णके नित्य परिकर होनेके कारण साधारण साधककी अवस्थासे परे हैं, तथापि अपने इस आचरणके द्वारा उन्होंने हम बद्ध साधक जीवोंको शिक्षा दी कि हमें अपनी सुख-सुविधाओं पर बहुत ध्यान नही देना चाहिये, बल्कि साधन-भजन पर ही हमारा विशेष ध्यान होना चाहिये।

—श्रीयुक्ता साधना दासी, मथुरा
[gurudevamemories.com से अनुदित]

https://www.facebook.com/srisribhagavatpatrika

श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाका संग्रह — पुराने अङ्कोको डाउनलोड किजिए।

प्रस्तुति - श्रीश्रीभागवत-पत्रिका सेवक-मण्डली